Dr. Vandana Suman
Professor
Dept. of Philosophy
H. D. Jain College, Ara

M. A. II Sem.
CC-07 : Gandhian Philosophy



## "Satyagraha" (सत्याग्रह)

गाँधी जी सत्य और अहिंसा के पोषक थे। उन्हें पता था कि सत्य और अहिंसा का जीवन में प्रयोग आवश्यक है, अन्यथा इसका मात्र सैद्धान्तिक महत्व रह जायेगा। यही कारण है कि अहिंसा को उन्होंने अपने राजनीतिक एवं सामाजिक जीवन में व्यवहार किया और इसी का नाम सत्याग्रह दिया। गाँधी जी ने सत्याग्रह को एक शुद्ध आत्मिक शक्ति के रूप में समझा है। गाँधी जी ने सत्य को ईश्वर तथा नैतिक दोनों ही अर्थों में समझा है। जितना लगाव गाँधी जी का ईश्वर से है उतना ही सत्य से है। सत्याग्रह का अर्थ है सत्य को पकड़ना। सत्याग्रह का उद्देश्य है सत्य और प्रेम के द्वारा अन्यायी को शोषक को बाध्य करना है कि वह शोषण करना छोड़ दे। सत्याग्रह के पीछे कोई निजी स्वार्थ नहीं होना चाहिए बल्कि सत्य के प्रति लगाव होना चाहिए। गाँधी जी कहते हैं कि सत्य का शोधक इस बात को मानकर चलता है कि आत्मा अमर है और यदि इस जन्म में सत्य की विजय नहीं होती तो दूसरे जन्म में अवश्य होगी।

सत्याग्रह की मान्यता है कि मनुष्य वस्तुतः अच्छाइयों से युक्त है क्योंकि वह देवत्व का अंश है। अशुभ या बुराई इसलिए वर्तमान है, क्योंकि वह व्यक्ति क्रोध, लोभ, मोह से ग्रस्त है। आवश्यकता इस बात की है कि इस व्यक्ति के अन्दर की वर्तमान अच्छाइयों को उभारा जाये जिससे वह स्वयं क्रोध, लोभ, मोह से मुक्त होकर सत्य को सत्य के रूप में समझे और अपनी कमियों के प्रति सचेत हो। इसलिए गाँधी ने सत्याग्रह का आधार मनुष्य के अन्दर वर्तमान अच्छाई को माना है।

गाँधी का कहना है कि सत्याग्रह के पीछे कोई घृणा भावना नहीं रहती बल्कि उसका आधार प्रेम है। विरोधियों के लिए भी प्रेम होना चाहिए। घृणा या संदेह सत्याग्रह की सफलता में बाधक हो सकते हैं।

गाँधी जी सत्याग्रह और निष्क्रिय विरोध में अन्तर करते हैं। सत्याग्रह निष्क्रिय अवस्था नहीं है बल्कि यह हिंसा से भी अधिक सक्रिय अवस्था है। निष्क्रिय विरोध में शक्ति का प्रयोग होता है और यह हिंसा को सर्वथा वर्जित नहीं मानता। यहाँ पर कभी-कभी अस्त्र-शस्त्र का भी प्रयोग किया जा सकता है। दूसरी तरफ सत्याग्रह किसी भी परिस्थिति में हिंसा को बढ़ावा नहीं देता। सत्याग्रह में किसी भी परिस्थिति में हिंसा का प्रयोग वर्जित है। निष्क्रिय विरोध में विरोधी के मन में दहशत पैदा किया जाता है लेकिन सत्याग्रह से विरोधी के मन में किसी तरह का आतंक नहीं भरा जाता। सत्याग्रह में मनुष्य स्वयं कष्ट झेलकर दूसरों पर विजय प्राप्त करने का प्रयत्न करता है। निष्क्रिय विरोध में हम कानून भंग कर देते हैं। फलस्वरूप इसमें कानून के प्रति वफादारी नहीं रहती। दूसरी तरफ सत्याग्रह में कानून के प्रति एक आदर भाव रहता है। सत्याग्रह ईश्वर के नियम को सबसे उच्च मानता है। निष्क्रिय विरोध में प्रेम का उच्च स्थान नहीं रहता और सत्याग्रह में घृणा का स्थान नहीं रहता। सत्याग्रह के पीछे सत्य की शक्ति छिपी रहती है। सत्याग्रह एक ऐसी विधि है जिसे व्यक्ति, समुदाय तथा राष्ट्र सभी समान रूप से प्रयोग कर सकते हैं।

सत्याग्रह की निष्क्रिय अवस्था में काईकारे गांधी ने इसे हिंसा से भी अधिक नाशक माना है। लेकिन सत्याग्रह में किसी भी अवस्था में हिंसा का प्रयोग वर्जित है। सत्याग्रह में इस नियम को सर्वोच्च मानकर उसका पालन करने का आग्रह रहता है।

गांधीजी ने सत्याग्रही के लिए अनेक गुणों को आवश्यक बताया है — 1. सत्याग्रही को अपने कार्य और उद्देश्य के प्रति ईमानदार होना चाहिए, वरना सत्याग्रह नाममात्र का सत्याग्रह रह जायेगा।

2. सत्याग्रही को अनुशासित सैनिक की तरह बर्ताव करना चाहिए और उसे निर्भीक होना चाहिए। सत्याग्रही को निःस्वार्थी एवं विनम्र होना चाहिए। उसे अहिंसक होना चाहिए।

3. सत्याग्रही को खुले दिमाग का एवं सहृदयी होना चाहिए। हृदय परिवर्तन तभी संभव है जब मनुष्य खुले दिमाग से किसी चीज को ग्रहण करता है।

4. सत्याग्रही को चरित्रवान होना चाहिए और संकल्प शक्ति मजबूत होना चाहिए।

5. सत्याग्रही को उपवास रखने की आदत होनी चाहिए। सत्याग्रही को जीवन के कुछ शाश्वत मूल्यों को वरण करना चाहिए। जैसे — अस्तेय, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य आदि।

6. सत्याग्रही को सहनशील होना चाहिए। सत्याग्रही को ईश्वर में विश्वास होना चाहिए।

यद्यपि गांधी जी सत्याग्रह को हर कठिन परिस्थिति और

सफल साधन ही रूप में मानते हैं अन्याय से लड़ने के लिए किन्तु जीवन की व्यावहारिक क्षेत्र में भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में भिन्न-भिन्न तरीकों से सत्याग्रह किया जा सकता है।

इस प्रकार सत्याग्रह के विभिन्न प्रकार का प्रश्न उठता है। सत्याग्रह के अनेक प्रकार हैं—

1. समझौता, 2. पंचायत, 3. आंदोलन एवं प्रदर्शन 4. आर्थिक बहिष्कार 5. असहयोग 6. सविनय अवज्ञा, 7. साक्षात प्रदर्शन, 8. उपवास, 9. हड़ताल 10. सहयोग के लिए आग्रह करना, 11. कर नहीं देना. 12. धरना

इन सारे सत्याग्रह के प्रकारों को गाँधी जी ने समान रूप से प्रयोग करने के लिए कहा है। गाँधी जी मानते थे कि सत्याग्रह का दुरुपयोग भी हो सकता है।

गाँधी जी का कहना है कि सत्याग्रह के पीछे यदि अभिप्राय ठीक न हो तो सत्याग्रह असफल हो जाता है।

गाँधी जी सत्याग्रह के जिन प्रकारों को इस्तेमाल करने की बात करते हैं वे हैं— सविनय अवज्ञा, असहयोग आन्दोलन एवं उपवास। सविनय अवज्ञा अन्याय के प्रति एक प्रकार से विरोध है। यहाँ गाँधी जी थोरो से प्रभावित दिखते हैं। दक्षिण अफ्रीका में गाँधी ने सविनय अवज्ञा का प्रयोग किया। असहयोग के सम्बन्धों में गाँधीजी का मत है कि हमें शोषक के साथ असहयोग करना चाहिए, जिससे की और अधिक शोषण न हो।

गाँधीजी का मत है कि सबसे उपयोगी एवं कारगर सत्याग्रह का प्रकार है उपवास। उपवास दो प्रकार से कार्य करता है— एक आत्मशुद्धि का दूसरा शोषक

के ऊपर नैतिक दबाव डालता है। जिसमें की वह सत्याग्रह छोड़ दे।

राजनीति के क्षेत्र में गांधीजी ने सत्याग्रह को एक अनूठा स्थान दिया और उनका यह प्रयोग सफल रहा। गांधीजी का मत है कि अहिंसक सत्याग्रह को हिंसा के द्वारा दबाना संभव नहीं है, यह बात दक्षिण अफ्रीका एवं भारत में सत्याग्रह के कई प्रयोगों से सिद्ध हो चुकी है।

इस तरह हम देखते हैं कि गांधीजी मानव समाज का आधार नैतिकता को मानते हैं। सत्य और अहिंसा के माध्यम से गांधीजी ने जो कुछ भी किया वह विश्व राजनीति में एक अनूठा योगदान है।